प्रारम्भिक बाल्यावस्था की जगहों में विशेष आवश्यकता वाले बच्चे

भुवनेश्वरी बी

आँगनवाड़ी केन्द्र में आने वाले बच्चों की सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों के अलावा उनकी शारीरिक क्षमताओं को समझना भी कार्यकर्त्री के लिए ज़रूरी है। कुछ बच्चे ऐसे हो सकते हैं जिन्हें शारीरिक अक्षमता के चलते सीखने में मुश्किलें आती हैं। यह लेख ऐसे बच्चों को, उनकी मुश्किलों को समझने और उनके अनुसार सिखाने की रणनीति के बारे में है।

चित्र 1: विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की ज़रूरत को समझकर उसके मुताबिक़ गतिविधियाँ डिज़ाइन करना ज़रूरी है

अमोघ चार साल का है। वह अभी दो हफ़्ते पहले से ही आँगनवाड़ी आने लगा है। शुरुआत में उसे किसी के साथ खेलना पसन्द नहीं था, अतः कार्यकर्त्री चिन्तित थीं। लेकिन एक दिन, कार्यकर्त्री को यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि खेल के दौरान, अमोघ एक छोटे समूह के साथ खेलने लगा। उसके बाद से उसने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। वह एक ख़ुशमिज़ाज, चंचल और उत्साही बच्चा था।

कार्यकर्त्री पिछले चार महीनों से अनीशा के साथ भी काम कर रही हैं। अनीशा हमेशा अपने साथियों के साथ खेलने से बचती है। जब कोई उसके पास खेलने के लिए आता है तो वह परेशान हो जाती है। वह काल्पनिक / बनावटी खेलों (pretend play) में बिल्कुल भी हिस्सा नहीं लेती। जैसे–बच्ची / बच्चे द्वारा डॉक्टर के उपकरणों की खिलौना किट के सामान से बनावटी मरीज़ को देखने का खेल खेलना, आदि। जब कोई उससे बात करता है तो वह उससे आँखें नहीं मिलाती। छोटी-छोटी आवाज़ें उसे चौंका देती हैं और वह रोने लगती है। कार्यकर्त्री इस सोच में हैं कि क्या वह अमोघ की तरह ही साथियों के साथ घुल-मिल पाएगी, या अब उन्हें किसी विशेषज्ञ की मदद लेनी चाहिए।

ये बच्चों की कुछ ऐसी परिस्थितियाँ हैं जो शिक्षकों के मन में अनिश्चितता पैदा करती हैं। बच्चे के प्रारम्भिक वर्षों के दौरान शिक्षक या उनकी सीखने में मदद करने वाले जो व्यक्ति होते हैं, वही उनके विकासात्मक सफ़र के बारे में सबसे पहली प्रतिक्रिया देने वाले भी होते हैं। वे ही वो व्यक्ति हो सकते हैं जो कुछ बच्चों में विद्यमान उन सूक्ष्म संकेतों को सबसे पहले पहचान सकते हैं जो अकसर नज़र ही नहीं आते। इन संकेतों में वाणी के विकास में थोड़ी देरी, कुछ सूक्ष्म गत्यात्मक गतिविधियों को करने में कठिनाई, कुछ विशिष्ट प्रकार के उद्दीपन जैसे शोर या तेज़ रोशनी के प्रति अलग-सी या तीव्र प्रतिक्रियाएँ देना या

> सभी बच्चे एक सतत क्रम में विकसित होते हैं, लेकिन एक ही गति से नहीं। विकास के मुख्य पड़ावों को जानने से कार्यकर्त्रियों को उन पैटर्न को देखने में मदद मिलेगी जो किसी चुनौती का संकेत दे सकते हैं।

साथियों के साथ बातचीत या खेलने में कठिनाई आदि शामिल हो सकते हैं।

कभी-कभी अभिभावक भी इन संकेतों को समझ नहीं पाते हैं। और अगर वे समझ भी जाते हैं तो उन्हें उम्मीद होती है कि विद्यालय में इन बातों पर ध्यान दिया जाएगा। हालाँकि अभिभावकों की उम्मीदें स्वाभाविक हैं, लेकिन अगर इन संकेतों पर ध्यान नहीं दिया जाता या उनकी सूचना नहीं दी जाती तो ये चीज़ें बच्चों के दीर्घकालिक विकास के परिणामों को महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकती हैं।

इन विकासात्मक अवस्थाओं में लगातार देरी विकासात्मक अक्षमताओं में बदल सकती है। प्रारम्भिक वर्षों में बच्चों में देखी जाने वाली सामान्य अक्षमताओं में सम्प्रेषण / बोलने और भाषा सम्बन्धी अक्षमताएँ, बौद्धिक अक्षमता, श्रवण अक्षमता, दृश्य अक्षमता, शारीरिक अक्षमता, ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम विकार, आदि शामिल हैं। कुछ अक्षमताएँ दिखाई देती हैं, जबकि अन्य को समझना आसान नहीं होता है।

देरी और सीखने में आने वाली मुश्किलों की पहचान करने में शिक्षक बेहतर स्थिति में क्यों होते हैं?

शिक्षक प्रतिदिन कई घण्टे बच्चों के अवलोकन और उनके साथ काम करने में बिताते हैं। वे कक्षा में, खेल के दौरान, और भोजन के समय उनका अवलोकन कर पाते हैं। इससे उन्हें बच्चों के उन पैटर्न को देखने की एक अनूठी नज़र मिलती है, जबकि अन्य लोगों से ये पैटर्न नज़रन्दाज़ हो सकते हैं।

शिक्षकों या आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों को किन चीज़ों से लैस करना चाहिए?

1. विकासात्मक पड़ावों को जानना :
शिक्षकों या आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों को यह जानकारी हो कि किसी विशेष आयु वर्ग के बच्चे से आमतौर पर क्या अपेक्षित है। उदाहरण के लिए, 3 साल के बच्चे को वाक्यों का उपयोग करके बोलने में सक्षम होना चाहिए। लेकिन अगर 4 साल की उम्र में भी कोई बच्चा छोटे-छोटे वाक्यांशों में बोलता है, या उसकी शब्दावली बहुत सीमित है तब बच्चे को मूल्यांकन के लिए भेजने की आवश्यकता है।

2. वस्तुनिष्ठ रूप से अवलोकन करना :
शिक्षकों को बच्चों के बारे में जल्दबाज़ी में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए, और उनका अवलोकन करते रहना चाहिए। उदाहरण के लिए, किसी बच्चे के काम पर टिप्पणी करते समय, यह लिखने के बजाय, कि "वह गणित में बहुत लापरवाह है", शिक्षक इस प्रकार से लिख सकते हैं, "अतिरिक्त समय दिए जाने पर भी उसने गणित के तीन प्रश्न हल नहीं किए, और दो अन्य प्रश्नों में + और - चिह्नों को आपस में बदल दिया।"

3. जब सम्भव / आवश्यक हो तो स्क्रीनिंग टूल का उपयोग करना :
शिक्षक जाँच नहीं कर सकते, लेकिन सरल स्क्रीनिंग टूल या चेक लिस्ट का उपयोग करके यह समझ सकते हैं कि बच्चा अपनी उम्र के अनुसार अपेक्षाओं को पूरा कर रहा है या नहीं, और फिर उसे मूल्यांकन के लिए भेज सकते हैं।

4. उदाहरणों के साथ अपने अवलोकनों को दर्ज करना :
शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चों के व्यवहार की आवृत्ति और सन्दर्भ को नोट करके उनके व्यवहार में पैटर्न ढूँढ़ने की कोशिश करें। वे बच्चों के बारे में बताने के लिए उनके चित्रों, वर्कशीट और लेखन के नमूनों का उपयोग कर सकते हैं। अभिभावकों या

चित्र 2 : बच्चों के कामों में छोटे-छोटे बदलाव से वे अपने काम पर ज़्यादा ध्यान देते हैं

> जब भी किसी बच्चे में देरी या अक्षमता का सन्देह हो तो उसके परिवार से बात करनी चाहिए, और बच्चे को मूल्यांकन के लिए किसी विकासात्मक बाल रोग विशेषज्ञ, बाल / नैदानिक मनोवैज्ञानिक, ऑडियोलॉजिस्ट, वाणी भाषा थेरेपिस्ट, प्रोफ़ेशनल थेरेपिस्ट या पुनर्वास मनोवैज्ञानिक के पास भेजना चाहिए।

अन्य प्रोफ़ेशनल के साथ बच्चे की समस्या के बारे में बात करते समय ये दस्तावेज़ प्रमाण के रूप में काम कर सकते हैं।

क्या याद रखना चाहिए ?

सभी बच्चे एक सतत क्रम में विकसित होते हैं, लेकिन एक ही गति से नहीं। विकास के मुख्य पड़ावों को जानने से शिक्षकों को उन पैटर्नों को देखने में मदद मिलेगी जो किसी चुनौती का संकेत दे सकते हैं। हालाँकि, हमें यह याद रखना होगा कि ये मुख्य पड़ाव अन्तिम समय सीमा नहीं हैं। हो सकता है 18 महीने का कोई बच्चा 10-15 शब्द बोलता हो, जबकि दूसरा 18 महीने का बच्चा शब्दों को मिलाकर वाक्य बोलना शुरू कर दे। अब हम कह सकते हैं कि दोनों अपेक्षित विकास सीमा में हैं। अन्तर का मतलब हमेशा देरी नहीं होता। जो बच्चा समूह में शान्त रहता है, वह शिक्षक के साथ अकेले में या घर पर अपनी मातृभाषा में बहुत बातूनी हो सकता है।

बच्चे का मूल्यांकन कब करवाना चाहिए ?

जब हम देखते हैं कि :

- 2 साल की उम्र तक बच्चे की शब्दावली में 50 सार्थक शब्द नहीं हैं।
- 3 साल की उम्र तक बच्चा वाक्यों में बोलने में सक्षम नहीं है।
- 2 साल की उम्र में बच्चा अपने-आप या स्वतंत्र रूप से चलने में असमर्थ है।
- बच्चा किसी से भी आँखें मिलाने से कतराता है, काल्पनिक / बनावटी खेलों में शामिल नहीं होता है।
- रोज़मर्रा की आवाज़ों पर ज़रूरत से ज़्यादा प्रतिक्रिया करता है, और कुछ ख़ास बनावटों को छूने से मना करता है।
- ग़ुस्से से भड़क उठता है या बहुत अलग-थलग रहता है।

बच्चे का अवलोकन करते समय, शिक्षकों को बहुत सावधानी बरतने की ज़रूरत है। बिना कोई दख़ल दिए यह देखना चाहिए कि बच्चा स्वाभाविक रूप से क्या करता है। बिना किसी पूर्वाग्रह के अवलोकनों को दर्ज करना बहुत ज़रूरी है। हम उसके व्यवहार में पैटर्न देखते हैं, और यह जानने की कोशिश करते हैं कि क्या कक्षा, खेल के मैदान जैसे सभी परिवेशों में एक-सा पैटर्न ही नज़र आ रहा है। हमें यह जानने की कोशिश करनी चाहिए कि क्या उसका व्यवहार उसके रोज़मर्रा के कामकाज को प्रभावित कर रहा है; और क्या उसके कौशल की कमी उसके सीखने में रुकावट बन रही है?

ऐसे अभिभावकों से कैसे बात करें जो सच्चाई स्वीकारने से इन्कार कर रहे हैं ?

पहली बात तो यह कि हमें अभिभावकों के साथ अपनी राय नहीं, बल्कि अपने ख़ास अवलोकन साझा करने चाहिए। उनसे बात करते समय हमें समानुभूति रखनी चाहिए। बच्चे पर कोई लेबल

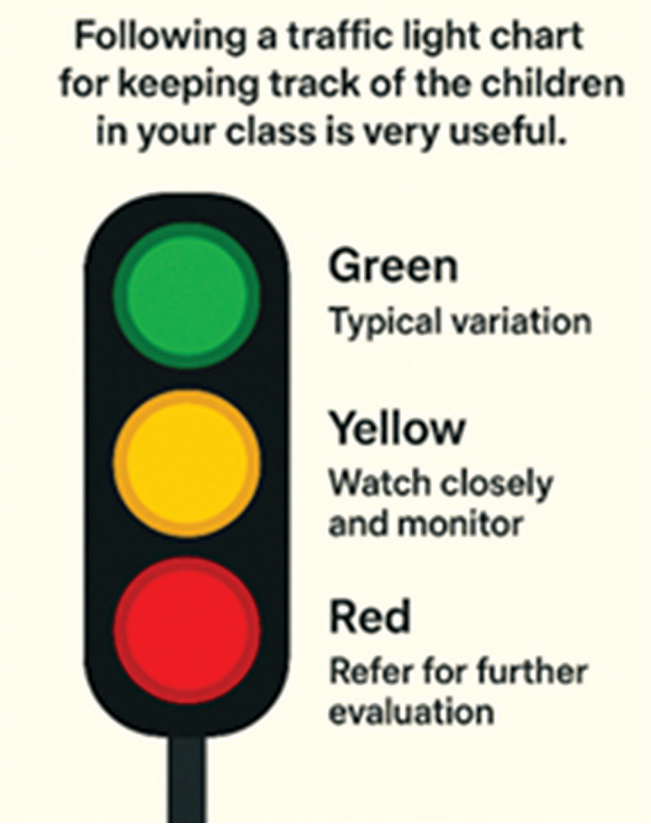

चित्र 3 : ट्रैफिक सिग्नल हरी, पीली, लाल बत्ती का चित्र

लगाने के बजाय इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि उसकी मदद कैसे की जाए। उदाहरण के लिए, हम यह नहीं कहें, "मुझे लगता है कि आपके बच्चे को ऑटिज़्म हो सकता है। मैं पक्के तौर पर तो नहीं कह सकता / सकती, लेकिन क्या आप उसका मूल्यांकन करवा सकते हैं?" इसके बजाय, हम यूँ कहें, "मैंने देखा है कि आपका बच्चा हमेशा अकेले खेलना चाहता है, और जब मैं उससे बात करता / करती हूँ तो वह मेरी तरफ़ देखने से कतराता है। मैंने यह भी देखा है कि वह बाहर के शोर से बहुत परेशान हो जाता है। अच्छा हो यदि किसी बाल रोग विशेषज्ञ से मिलकर उनकी राय ले ली जाए ताकि हमें पता चल सके कि उसकी मदद कैसे करें।" इस बात पर ज़ोर देना चाहिए कि आगे आने वाली समस्याओं से बचने के लिए बच्चे की मदद जल्द-से-जल्द की जाए।

बच्चों को किसके पास भेजना चाहिए ?

जब भी बच्चों मे किसी देरी या अक्षमता का सन्देह हो तो उनके परिवार से बात करनी चाहिए, और बच्चे को मूल्यांकन के लिए किसी विकासात्मक बाल रोग विशेषज्ञ, बाल / नैदानिक मनोवैज्ञानिक, ऑडियोलॉजिस्ट, वाणी भाषा थेरेपिस्ट, प्रोफ़ेशनल थेरेपिस्ट या पुनर्वास मनोवैज्ञानिक के पास भेजना चाहिए।

प्रारम्भिक शिक्षा के स्थानों को और अधिक समावेशी कैसे बना सकते हैं ?

जैसे ही शिक्षकों / आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री को पता चले कि बच्चे को अतिरिक्त मदद की ज़रूरत है, उसके साथ काम करना

शुरू कर देना चाहिए। जब तक हमें किसी विशेषज्ञ द्वारा सुझाव मिले, हम रोज़मर्रा के कामों में छोटे-छोटे बदलाव कर सकते हैं। यह बदलाव बच्चे के लिए बहुत लाभकारी होंगे। जैसे अगर कोई बच्चा ध्यान केन्द्रित नहीं कर पा रहा है तो हम कक्षा में एक शान्त कोना बनाने पर विचार कर सकते हैं। बच्चा उस निर्धारित स्थान पर चुपचाप बैठकर अपना काम पूरा कर सकता है। इस तरह के कोने उसे शान्त होने और अपने काम पर ज़्यादा ध्यान देने में मदद करेंगे। अगर किसी बच्चे को एक गतिविधि से दूसरी गतिविधि में जाने में दिक़्क़त होती है, और वह अपनी दिनचर्या पर बहुत ज़्यादा निर्भर रहता है तो चित्र 4 में दी गई दृश्य अनुसूची का इस्तेमाल करना अच्छा रहेगा। दृश्य अनुसूची से बच्चे को दिनचर्या, और आगे क्या करना है, यह समझने में मदद मिलेगी।

चित्र 4 : दृश्य अनुसूची से बच्चों को दिनचर्या समझने में मदद मिलती है

बच्चों को छोटे-छोटे, स्पष्ट चरण बताकर प्रतिक्रिया देने के लिए अतिरिक्त समय देने से उन्हें महसूस होगा कि वे कक्षा की गतिविधियों से जुड़े हुए हैं, और उन्हें कक्षा में स्वीकारा जा रहा है। जिन बच्चों को दोस्त बनाने में दिक़्क़त होती है, उनकी मदद करने के लिए शिक्षकों को चाहिए कि वे कक्षा के अन्य बच्चों को उन बच्चों के साथ घुलने-मिलने के लिए प्रोत्साहित करें। बच्चे क्या कर सकते हैं, इस बात पर ध्यान देने की कोशिश करें, और बच्चे के स्तर से ही शुरुआत करें। उदाहरण के लिए, अगर पाँच साल का बच्चा छोटी चीज़ें नहीं पकड़ पाता, लेकिन उसे पेंटिंग करना पसन्द है तो शिक्षक उसे एक बड़ा पेंटब्रश और एक बड़ा काग़ज़ या चार्ट देकर धीरे-धीरे छोटी चीज़ें दे सकते हैं। इससे बच्चे को अपने आत्मसम्मान से समझौता किए बिना सीखने में मदद मिलेगी।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि शिक्षकों का अवलोकन, अनुक्रियात्मक शिक्षण और परिवारों के साथ संवेदनशील जुड़ाव, ये सारी बातें सभी बच्चों के विकास के सफ़र में बहुत मददगार हो सकती हैं, ख़ासकर विकासात्मक रूप से कमज़ोर बच्चों के विकास में। अभिभावकों के इन्कार करने पर भी यदि तुरन्त कार्यवाही की जाए तो कई बच्चों को आगे बढ़ने में मदद मिलेगी, अन्यथा वे पिछड़ सकते हैं। हमें यह समझना चाहिए कि शिक्षक ही परिवार के बाहर वाले ऐसे लोग होते हैं जो बच्चे का बारीक़ी से अवलोकन करते हैं। वे कुछ ऐसे पैटर्न देखते हैं जो चिन्ता का विषय हो सकते हैं। जब शिक्षक सहानुभूतिपूर्वक कार्य करते हैं, बच्चों के लिए अवसरों के द्वार खुल जाते हैं।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

भुवनेश्वरी बी अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बेंगलूरु के शिक्षा संकाय में कार्यरत हैं। वे प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा और अधिगम अक्षमता वाले बच्चों के शिक्षण से सम्बन्धित विषयों का अध्यापन करती हैं। उन्हें भाषा, साक्षरता और ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम विकार, आदि के शोध में रुचि है। अध्यापन के अलावा, वे यूनिवर्सिटी में अक्षमता समावेशन जैसे कार्यक्रमों का नेतृत्व भी करती हैं।

सम्पर्क : bhuvaneswari.b@apu.edu.in